शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मा सक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

# डॉ. मधु धवन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अम्बुजा एन.मलखेडकर
गुलबर्गा वश्व वद्यालय, कर्नाटक

*संसार में मनुष्य एक ऐसा जीवी है जो अपनी भावनाओ को शब्द द्वारा दूसरे तक पहुँचाने की को शश करता है। इनमें कुछ वशेष व्यक्ति होते हैं, जो वशेष शैली में अपनी अनुभूतियों एवं वचारों को व्यक्त करते हैं। इन्हें हम साहित्यकार कहते हैं। डॉ मधु धवन भी प्रभावशाली व्यक्तित्व की धनी एवंबहुमुखी साहित्यकार हैं।*

डॉ. मधु धवन ने अपनी रचनाओं में भारतीय नारी, समाज, देश आदि समस्याओं को यथार्थ रूप में चत्रित करके अनेक ज्वलंत मानवीय प्रश्नों को उठाया है। और मानव को सही दिशा में सोचने की बेचैनी पैदा की है। नाटक कहानियाँ, उपन्यास आदि उन्हें प्र स द्ध पथ पर ले जाने के सबूत हैं।

अ) जन्म :

डॉ. मधु धवन का जन्म 21 अप्रैल, 1952 को तरन तारन के एक पंजाबी घराने में हुआ था। परिवार अत्यंत प्रतिष्ठित, प्रतिभाशाली एवं समृद्धशाली था,इस लए बचपन वैभव में बीता। हर तरह की सुख समृ द्धयों के बीच कभी कोई तंगी नहीं रही। सात भाइयों एवं तीन बहनों से घिरे परिवार में बड़े परस्नेह एवं सौहार्द्रता के कारण बचपन सुखमय रहा। बचपन में ही घर में ढेर सारी पुस्तकें एवं पत्रिकाएं पढ़ने को मलती थीं। बहरहाल पढ़ने का शौकतभी जग पाया। घर में दादाजी अकसर देश-निर्माण एवं सामाजिक वषयों पर मत्रों से चर्चा करते थे जिसका उनके व्यक्तित्व निर्माण में काफी प्रभावपड़ा है। बाल्यकाल का अ धकांश समय यात्रा में बीता। पता यायावर थे। सपरिवार जंगल, गाँव, शहर का भ्रमण करते रहे। प्रकृति के साथ तादात्म्यबचपन में ही हो गया था।

आ) पारिवारिक जीवन

डॉ. मधु धवन के पता दिवंगत राजकुमार चौपडा अत्यंत धा र्मक प्रवृत्ति के थे। बहुभाषी होने के कारण पुत्री मधु को कई भाषाओं का ज्ञान कराया। धा र्मक प्रवृत्ति के कारण घर में सदा भागवत, रामायण, गीता आदि का पाठ हुआ करता।

मधु धवन की माता का नाम श्रीमती शकुन्तला चौपडा है। वे गौर वर्ण की लम्बी चौड़ी देह लए आकर्षक व्यक्तित्व की नारी हैं। वे व्यवहार कुशल एवंस्फूर्तिदायक नारी हैं। पूजापाठ, व ध वधान एवं धा र्मक अनुष्ठान में उन्हें गहरी श्रद्धा एवं वश्वास था।

इ) शक्षा एवं कार्यक्षेत्र : 1968 में उन्होंने महारानी कॉलेज से बी.ए. एवं एम.ए. की डग्री ली और बंगलौर वश्व वद्याल से पी.एचडी. की उपा ध हा सलकी। उन्होंने व भन्न वषयों का ज्ञान अर्जित कया। शक्षा के प्रति अ धक रु च होने के कारण उन्होंने अपने को सी मत क्षेत्र में नहीं बाँधा।

ई) ववाह : सन् 1974 की आठ दिसम्बर को श्री वज धवन से पा णग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे के पूरक बन सुखी जीवनयापन कर रहे हैं। ववाह उपरान्त ही चेन्नई शहर में उनका आगमन हुआ। उनके चेन्नई शहर में कदम पड़ते ही साहित्य के क्षेत्र में शाद शहनाई-सी गूँजी, क्यों क उनके आगमन के बाद ही साहित्य वाटिका महकने लगी है और इसकी खुशबू दूर-दूरांतर तक फैल रही है।

उ) व्यक्तित्व : उनका स्वर वनम्र है और उनमें मानवीय उदारता से उपजी एक सहज सात्विक आस्था है। उनका जीवन चंतनशील होने के साथ-साथ मृद है। मन में चाहे जितनी भी उथल-पुथल

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मा सक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

हो, दुःख पीड़ा हो, मन के भाव चेहरे पर कभी प्रतिबिम्बित नहीं होने देतीं। मधुजी अत्यंत उदार प्रकृति की हैं। उनकी कटु आलोचना करने वाले व्यक्ति भी जब उनके पास मदद के लए आते हैं तो उसी सद्भाव एवं सौजन्य से वे उनकी सहायता करती हैं। उनका व्यक्तित्व एक भरा-पूरा एवं समृद्ध व्यक्तित्व है। वे अत्यंत वनोद प्रय एवं हाजिर जवाब हैं। उनकी वनोद प्रयता के कारण ही उनके मत्रों की संख्या असंख्य है। वे समय-समय पर चुटकुले आदि सुनाकर खूब हँसाती हैं। मधु जी खुद भी दिल खोल कर हँसती हैं। उनकी वेशभूषा, खान-पान,रहन-
सहन, संगीत, खाद्य, पहनावा, ओढ़ावा, पत्र-पत्रिकाएँ रखने का ढंग सब कुछ निराला है। उनके खाने-पीने में भी रईसी छाई है। उन्हें सफाई एवं स्वच्छता की सनक-सी है। वे मामूली चीजों से ज्यादा असाधारण चीजें खरीदना, पहनना, रखना पसंद करती हैं। लोभ, लालच से अपने को सर्वथा मुक्त रखा है। मधु धवन का व्यक्तित्व समन्वयकारी है।

ए) कार्यक्षेत्र :

मधु धवन ने अध्यापन के ही कार्य क्षेत्र के रूप में अंगीकार कया। समृद्ध घराने में पली-बढ़ी मधु जी के सामने रुपए-पैसे की तंगी कभी नहीं रही। शक्षण कार्य को बड़ी ही निष्ठा से पूर्ण कया। आज भी स्कूल एवं कालेज के अध्यापक एवं अध्या पकाओ को प्र शक्षण देने हेतु केवल चेन्नई शहर से ही नहीं वरन् अन्य शहरों से भी निमंत्रण आते रहते है।

ऐ) पुरस्कार एवं सम्मान :

अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं नेतृत्व योग्यता के लए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित कया गया है। कई राज्यों में कार्य शालाएं चलाने हेतु उन्हें आमंत्रित भी कया जाता है। कई राज्यों के पाठ्यक्रम बनाने के लए भी वे एक शक्षा वद् के रूप में योगदान देती हैं। उन्हें प्रमुख पुरस्कार के रूप में निम्न ल खत संस्थानो ने सम्मानित एवं पुरस्कृत कया है- 16 अप्रैल, 1997 को सम र्पत सेवा का प्रशस्ति पत्र द क्षण भारत हिंदी प्रचार सभा की ओर से उन्हें दिया गया।
हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से 14 सतम्बर, 1998 को उन्हें प्रशस्ति पत्र देते हुए प्रधानमंत्री श्रीधर शास्त्री ने कहा क जिनके कृतित्व के माध्यम से साहित्य का साध्य की वस्मयकारिणी अ वच्छिन्न स्थिति के संस्पर्श से प्राप्त आनन्द की अनुभूति हुई -ऐसी साहित्य जगत की नक्षत्र डॉ.मधु धवन को हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग आज हिंदी दिवस 1998 के पुण्य पर्व पर वाड्मय मधुपर्क अ र्पत करता है।
केन्द्रीय वद्यालय स मति की शक्षा वद् के रूप में 3 जुलाई, 1999 से वे कार्यरत हैं। वक्रम शला हिंदी वद्यापीठ गाँधीनगर की ओर से 28 मई, 2000 को उनकी सुदीर्घ हिंदी सेवा सारस्वत साधना कला वज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां शै क्षक प्रदेय शोध कार्य तथा अंतरप्रतिष्ठा के आधार पर वद्यासागर की उपा ध से अलंकृत कया गया।
ऐ शया पै स फक की व्हू इस व्हू में इनका नाम शा मल है।
14 सतम्बर, 2001 में इण्टरनेशनल बायोग्रा फकल कैम्ब्रिज इंग्लैण्ड द्वारा 2001 वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में उन्हें पुरस्कार दिया गया। इसीइंस्टीट्यूट ने उनका नाम अंतर्राष्ट्रीय कोष में भी दर्ज कया गया ।
सहस्त्राब्दी वश्व हिंदी सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय वश्वशांति प्रबंधक महासंघ के शासी एवं शै क्षक परिषद् की ओर से भारतवर्ष में हिंदी भाषा के वकास एवं सम्बन्धित कार्यक्रमों के सुदृढ़ीकरण में समल योगदान के कारण उन्हें हिंदी सेवी सहस्त्राब्दी का पुरस्कार नई दिल्ली में 14-23 सतम्बर, 2000 में आयोजित

सहस्त्राब्दी वश्व हिंदी सम्मेलन के शुभ अवसर पर दिया गया।
ऊपरि ल खत इन पुरस्कारों के अलावा भी हाल में वे कई पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुकी है। 2001 में हिन्दी में और 2002 में मद्रास के द क्षण भारतहिंदी प्रचार सभा में व शष्ट साहित्यिक रचनाकार के रूप में उन्हें सम्मनित कर पुरस्कार दिया गया है।
क्लास रूम टी चंग मेथडालॉजी के लए देश में व शष्ट वक्ता के रूप में उन्हें आमंत्रित कया जाता है।
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से वर्ष 2001 से 2003 तक की त मलनाडु की हिंदी वशेषज्ञ के पुरस्कार से सम्मानित हुई।
ओ) रचना संसार : मधु धवन का साहित्य रचना संसार बहुआयामी है। उनके समग्र' साहित्य को हम निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं -
काव्य संग्रह :
स्व र्णम भारत, खंड काव्य हुतात्मा, भारत ललाट, कार गल की ललकार

नाटक :
मैंने कब चाहा, शहीद भगत संह, त्रास, भारत कहाँ जा रहा है।
उपन्यास :
करवट लेता
वक्त, जुर्माना, आकांक्षा, शक्तिपुंज, शखर से से ऊँचा, उसी मोड़ पर, महासागार के शंख, तूफानी झंझा का दीया, पर रा पंक्षी-कल्कि, सृष्टि की आत्मा हूँ
पत्रकारिता : पत्रकारिता एक परिचय
कहानी संग्रह : झरते अश्रु
आलोचना : नरेश मेहता की शबरी, मै थली शरण गुप्त का नहुष ।
अनुवाद :
1) सद्ध औषध
पुस्तकें :
त मल से हिन्दी (अंग्रेजी से हिंदी)-31 डॉ. सेठ की वष्वाणी (अंग्रेजी से हिंदी), त मल टेली फल्म 'अम्मा' (त मल से हिंदी) अनुवाद सलाहकार - गंगा मैया (हिंदी से अंगरेजी) उपन्यास । 9. सम्पादन, भारती काव्य संग्रह, भारती गद्य संग्रह, भारती कहानी संग्रह, राजभाषा नीति, प्रयोगात्मक व्याकरण, पत्रकार, पारिभा षक शब्दावली, टिप्पण एवं प्रारूपण, नवीन एकांकी संग्रह वज्ञापन कला। 10 धा र्मक पुस्तक : भारत दर्शन, जगतगुरु की नगरी- काँचीपुर, लेखन एवं संपादन 11. वी डयो कैसेट संप्रेषण आइए हिंदी सीखें 12. त मलनाडु मैट्रिकुलेशन बोर्ड के लए ज्ञान वर्षा श्रृंखला 14 पुस्तकें (सीरीज) भाषा सुधा 6पुस्तकें (सीरीज)
मधु धवन एक बहुमुखी प्रतिभावान ले खका हैं। हिन्दी साहित्य के लए उनका बहुत बड़ा योगदान है। आज भी वे लेखन में व्यस्त है।